

26. कबीर दास

—आचार्य जयराम शर्मा

हिन्दी साहित्य के भक्ति कालीन संत कवियों में महात्मा कबीर का नाम विशेष श्रद्धा के साथ लिया जाता है। कबीरदास सन्त परम्परा में निर्गुण काव्य धारा के भविष्यद्रष्टा और प्रगतिशील कवि माने जाते हैं। कदाचू दयाल, नानक दास, सुन्दर दास, मलूक दास आदि उनके समकालीन संत कवि थे।

कबीर दास का जन्म सन् 1398 में काशी में हुआ था। उनके जन्म के सम्बन्ध में एक जन-श्रुति प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि वे किसी विधवा ब्राह्मणी की सन्तान थे। माता ने लोक-लाज के भय से उन्हें काशी के लहरतारा नामक तालाब के पास फेंक दिया था। संयोगवश नीरू और नीमा नाम निःसंतान दम्पति उधर से निकले। उन्हें तालाब के किनारे पर किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी। बच्चे को अकेला रोता देखकर बड़े प्यार से उन्होंने उसे उठाया और अपने घर ले आए। इन्हीं नीरू और नीमा ने उस बच्चे का पालन-पोषण किया जो आगे चलकर कबीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

कबीर का मन बचपन से ही ईश्वर भक्ति में रमने लगा था। किन्तु वे किसी पहुँचे हुए विद्वान् गुरु की तलाश में थे, सौभाग्यवश, तत्कालीन सन्त शिरोमणि स्वामी रामानन्द से उनकी भेंट हो गई। स्वामी रामानन्द ने कबीर को अपना शिष्य स्वीकार करके उन्हें 'राम नाम' का मन्त्र दिया। गुरु से दीक्षा पाकर कबीर की सारी दुविधाएँ दूर हो गईं। उन्होंने एक स्थान पर स्वयं कहा है—

सतगुरु के परताप से मिटि गयौ सब दुःख दन्द।

यह कबीर दुविधा मिटी गुरु मिलिया रामानन्द॥

स्वामी रामानन्द से दीक्षित होकर कबीर ने अनेक स्थानों का भ्रमण किया। इस कालावधि में वे कठोर साधना व तपस्या में लीन रहे। कबीर भले ही पढ़े-लिखे न थे, किन्तु उन्होंने साधु-संगति तथा देशाटन से जीवन और जगत का गहन ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

कबीर दास गृहस्थी थे। उनकी पत्नी का नाम लोई था। उनकी दो सन्तानें थीं। पुत्र का नाम कमाल तथा पुत्री का नाम कमाली था। सन्तों की संगति में रहते हुए कविता रचने के साथ-साथ वे जुलाहे का काम भी करते थे। सच्ची बात को कहने से वे कभी चूकते नहीं थे। कबीर निर्भय और दबंग प्रकृति के व्यक्ति थे। खरी-खरी और दो टूक बात कहने में कबीर जैसा दूसरा कोई नहीं हुआ।

महात्मा कबीर सच्चे समाज सुधारक भी थे। उन्होंने समाज में फैले अन्ध-विश्वासों और धार्मिक जीवन में आई हुई कुरीतियों का साहस के साथ विरोध किया। इस दृष्टि से उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम दोनों को आड़े हाथों लिया। धार्मिक विसंगतियों पर करारी चोट करते हुए वे कहते हैं :-

दिन भर रोज़ा रहत हैं, राति हनन हैं गाय।

यह तो खून वह बंदगी, कैसे खुली खुदाय॥

अर्थात् दिन भर रोज़ा रखकर रात को गोहत्या करने वाले बन्दों की बन्दगी से खुदा कभी खुश नहीं होगा।

हिन्दुओं की भी इसी कुप्रवृत्ति के लिए वे उन्हें यों फटकारते हैं :-

बकरी पाती खाति है, ताकी काढ़ी खाल।

जो नर बकरी खात है, जिनका कौन हवाल॥

सारांश यह है कि महात्मा कबीर जीव-हिंसा और मांस-भक्षण के घोर विरोधी थे।

जो पूजा पद्धति मन को पवित्र नहीं करती, कबीर उसका विरोध करते थे। उनका विश्वास था कि चक-मक पत्थर में जैसे आग समाई रहती है और घर्षण करने पर प्रकट हो जाती है, ठीक उसी प्रकार ईश्वर मनुष्य के हृदय में बसा हुआ है। सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर ईश्वर को पाया जा सकता है। दिखावे के लिए की जाने वाली मूर्तिपूजा की धज्जियां उड़ाते हुए वे कहते हैं :-

पाहन पूजै हरि मिलें तो मैं पूजूँ पहार।

या ते तो चकिया भली, पीसि खाय संसार॥

कबीर धर्म के बाह्य-आडम्बरों और प्रदर्शन में विश्वास नहीं रखते थे। ऊँच-नीच और जाति-पांति के भेदभाव को उन्होंने कभी भी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने तो सदैव साधु-संगति, गुरु-महिमा, ध्यान, सदाचार, आत्म-पवित्रता और सर्व-धर्म-समन्वय पर बल दिया है। ज्ञान देने वाले गुरु को उन्होंने सर्वोपरि माना है। यहाँ तक कि वे गुरु को भगवान् से भी बड़ा मानते हैं। उदाहरणार्थ :-

गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े, का के लागो पाय।

बलिहारी गुरु आपने गोबिन्द दियो बताय॥

कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है जो रमैनी, साखी और शब्द तीन भागों में विभक्त है। रमैनियाँ बीजक का महत्वपूर्ण अंग मानी जाती हैं। सामान्यतः रमैनी में सात चौपाइयों के बाद एक दोहा आता है। 'साखी' शब्द का अर्थ है-साक्षी। आगे चलकर गुरु के उपदेशों को ही गुरु का 'साखी' समझा जाने लगा। गेय पद शब्द (शब्द) हैं। पद लिखने की परम्परा बहुत पुरानी है। पदों में आत्म समर्पण और भक्ति भावना की प्रधानता रहती है।

पवित्र धर्म ग्रन्थ 'गुरु ग्रन्थ साहिब' में कबीर-वाणी को संकलित किया गया है। भाषा पर तो कबीर का असाधारण अधिकार था। विभिन्न बोलियों और साधु-संगति के प्रभाव से उनकी भाषा को 'सधुक्कड़ी भाषा' की संज्ञा दी जाती है।

कबीर दास जी ने दीर्घ आयु पाई थी। जीवन पर्यन्त वे अपने शिष्यों को मानव मूल्यों की शिक्षा देते रहे। काशी के पास 'मगहर' नाम स्थान पर सन् 1495 में उनका देहावसान हुआ था। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही धर्मों के लोग महात्मा कबीर के शिष्य थे। एक किंवदन्ती के अनुसार कबीर की मृत्यु के बाद उनके मुसलमान शिष्य उन्हें दफनाना चाहते थे, जबकि हिन्दू शिष्य अपने धार्मिक रीति-रिवाज के अनुसार उनके शव को जलाना चाहते थे। कहते हैं कि जब उनके मृत शरीर पर से चादर हटाई गयी तो वहाँ कुछ फूल मिले। उन फूलों को हिन्दू और मुसलमान शिष्यों ने बाँट लिया।

कबीर अति संवेदनशील सन्त कवि और समाज के सच्चे हितैषी थे। उनके उपदेशों में निहित प्रेम और सामाजिक भाईचारे का सन्देश आज भी पूर्ण रूप से प्रासंगिक तथा मानवोपयोगी है। उनका कहना है कि धार्मिक गहनता में जीवन जीने वाले सभी व्यक्ति प्रेम और सुखपूर्वक रह सकते हैं, भले ही वे किसी भी जाति, सम्प्रदाय या धर्म के क्यों न हों। कहना न होगा कि महात्मा कबीर ने राग-द्वेष से ऊपर उठकर घर फूँककर भी अपने सिद्धान्तों की रक्षा की -

कबिरा खड़ा बजार में लिए लुकाटी हाथ।

जो घर फूँके आपनो चलै हमारे साथ॥

अभ्यास

1. कबीर दास का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
2. कबीर दास ने गुरु को भगवान् से बड़ा क्यों माना है ?
3. कबीर दास कैसे स्वभाव के व्यक्ति थे ?
4. कबीर दास ने धार्मिक जीवन में आई किन-किन कुरीतियों का विरोध किया ?
5. कबीर दास की वाणी का संग्रह किस नाम से प्रसिद्ध है ?

